IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

विलुप्तता के कगार पर असुर जनजाति की संस्कृति का समाजशास्त्रीय अध्ययन (गुमला जिला का बिशुनपुर प्रखंड के संदर्भ में)

(डॉ मधु कुमारी, समाजशास्त्री, राँची विश्वविद्यालय राँची)

सारांश

यह लेख झारखंड की अत्यंत पिछड़ी जनजाति 'असुर' की सांस्कृतिक विरासत और उसके वर्तमान विघटन का विश्लेषण करता है। गुमला जिले का बिशुनपुर प्रखंड पर केंद्रित यह अध्ययन यह समझने का प्रयास करता है कि आधुनिकता, धर्म परिवर्तन और आर्थिक कारकों ने कैसे इस प्राचीन समुदाय की विशिष्ट पहचान को हाशिये पर धकेल दिया है। असुर जनजाति एक आदिम जनजाति है जो भारत के झारखंड एवं पश्चिम बंगाल क्षेत्र में विद्यमान है झारखंड में इनका मुख्य निवास गुमला जिला का पाठ क्षेत्र है । इनकी भाषा आसुरी है और यह मुख्य रूप से प्रकृति से जुड़े हुए हैं । वैदिक साक्ष्यों से प्रमाणित होता है कि ये असुर ही पुर व्यवस्था के जन्मदाता थे असुरो को 'पूर्वदेवा' कहा गया है और इनकी संस्कृति को मय-संस्कृति कहा गया है। असुर जनजाति शिल्प कला, भवन निर्माण की कला में ये अप्रतिम थे। असुरो के पास अनेक रहस्मयी विधाएँ थी। समय चक्र के साथ असुर जनजाति एक स्थान से दूसरे स्थान पलायन करते हुए दयनीय स्थिति के रूप में जीवन व्यतीत करने लगे। धीरे-धीरे आर्थिक रूप से कमजोर होते गए। इनकी वास्तविक स्थिति देखने पर यह प्राप्त होता है कि यह अत्यंत गरीब है अतः इन्हें आसानी से कुछ पैसे देकर परिवर्तित किया जा सकता है। गरीबी के कारण ये लोग पलायन भी कर रहे है । इस प्रकार इनका विलुप्तता के कगार पर आना स्वभाविक है । इनकी वास्तविक संस्कृति को परिवर्तित होने से बचाने के लिए सरकार को इनकी वास्तविक जरूरतो को पूरा करना होगा । इनके लिए सरकार योजना तो बना रही है परंतु जब तक ये लोग शिक्षित नहीं होंगे अपने अधिकार का पूर्ण उपयोग नहीं कर पाएंगे।

वर्तमान में यह ध्यान देने की आवश्यकता है इनको शिक्षा दिया जाए परंतु इनकी संस्कृति को कोई हानि न पहुंचे । भारत की प्राचीनतम और गौरवशाली जनजातियों में से एक 'असुर' आज अपने अस्तित्व के सबसे कठिन दौर से गुजर रही है। झारखंड के छोटानागपुर पठार की पहाड़ियों और गुफाओं में निवास करने वाला यह समुदाय, जिसे 'विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह' की श्रेणी में रखा गया है, आज आधुनिकता की दौड़ और सरकारी उपेक्षा के कारण विलुप्त होने की कगार पर है।

मुख्य बिंदु — असुर जनजाति, संस्कृति, गरीबी , धर्मांतरण।

उद्देश्य — 1) असुर जनजाति की संस्कृति का अध्ययन करना।

2) असुर जनजाति की संस्कृति के विलुप्तता के कारणों का अध्ययन करना ।

शोध विधि — प्राथमिक स्रोत एवं द्वितीयक स्रोत

भूमिका

असुर जनजाति आदिम जनजाति है। असुर मुख्यतः नेतरहाट के पठारी क्षेत्रों में पाए जाते है। यह पठारी क्षेत्र छोटानागपुर के उतरी पश्चिमी कोणों में फैला हुआ है। इसकी चोटी कहीं कहीं समतल है जिसे पाट कहते है।

बनर्जी , शास्त्री के अनुसार, असुर एक शक्तिशाली समुदाय था जिसे वैदिक आर्य सम्मान देते थे। लेकिन आगे चलकर आर्यो ने अपनी छल-कपट एवं भ्रष्ट नीति के तहत शारी संख्या में असुरो के वंशजों को मारा। वनर्जी, शास्त्री के अनुसार प्रागैतिहासिक युग में असुर आसरियन के रूप में प्रकट हुए। आसरियन मिश्र और बेबी लॉन की सभ्यता के अनुरूप थी। उन दिनों आसरियन सभ्यता चरम सीमा पर फल फूल रही थी। असुर समुद्री यात्री के रूप में प्रसिद्ध रहे जो बाद में सिंधु घाटी सभ्यता के निर्माता के रूप में पहचाने जाने लगे। इस प्रकार राय ने असुरों को सिंधुघाटी निर्माता माना इन्होंने यह भी कहा है असुर नवपाषण युग से होते हुए लौह युग तक आए है।

खुदाई के क्रम में असुरो के बहुत उपकरण प्राप्त हुए है जो पत्थर, तांबा, लोहा, सोना से बने हुए है। राँची जिले में असुर के किलो एवं समाधि स्थल पाये गये है। मजुमदार ने भी स्पष्ट किया है कि आर्यों के समय काफी ताकतवर एवं बलवान के रूप में असुरो को जाना जाता था। मजुमदार ने भी आर्यों और असुरो के बीच युद्ध की बात को स्वीकार किया है।

संकालिया 1971 ने कहा है कि रामायण प्रारम्भिक लौहयुग की धाना है। आधुनिक विचारों में रूपने, एलवीन, हट्टन, थापर, गुप्ता आदि मुख्य है इनका मानना है कि असुर सिंधु घाटी सभ्यता के निर्माता थे। परन्तु कब कैसे ये जंगली और शिकारी हो गये यह अभी भी शोध का विषय है।

हरि मोहन के मतानुसार, "असुर प्रोटो अस्ट्रोलायड है तथा इनकी असुरी भाषा आस्टोएशियाटिक भाषा परिवार से संबंध रखती है।

असुरो को 'पूर्वदेवा' कहा गया है ऋग्वेद में असुरो के द्वारा निर्मित पुरो का वर्णन है और ये पुर तीन धातु -सोना- चाँदी और लोहा-से निर्मित अलग-अलग अस्तित्व वाले थे। वैदिक साक्ष्यों से प्रमाणित होता है कि ये असुर ही पुर व्यवस्था के जन्मदाता थे और वत्र्तमान पुरातवेत्ताओं का एक वर्ग भी निश्चित रूप से मानता है और प्रमाणित करता है कि हड़प्प-मोहनजोदड़ो की संस्कृति असुरों की संस्कृति थी और वे नगर उन्ही के पुर थे। इनकी संस्कृति को मय-संस्कृति कहा गया है। असुर जनजाति शिल्प कला, भवन निर्माण की कला में ये अप्रतिम थे। असुरो के पास अनेक रहस्मयी विधाएँ थी। 'जल-बंध' विधा में ये माहिर थे। भूगर्भ में इनकी आलीशान महल होते थे। संगमरमर कला का भी असुरों को ज्ञान था। इसके अतिरिक्त अस्त्र-शस्त्र निर्माण व लौह विद्या में निपुण एवं प्रवीण थे। महाभारत काल में पांडवों के मायावी महल का निर्माण करने वाला " मय असुर "था।

ऋग्वेद में असुरों के साथ आर्यों के संघर्ष की चर्चा है और असुरों की समारिक सता का सुनिश्चित संकेत मिलता है। संघर्ष के एक बिंदु पर आते-आते आर्य हताश निराश हो गए और सहायता याचना करने इंद्र की शरण में गए। इंद्र ने असुरों के साथ अंतिम युद्ध में एक लाख असुरों को मार डाला और इतने ही प्राण बचाकर लिए पर क्षेत्रों में लुक छुप

गए। जिन के वंशज कालांतर में मध्य दिशा (मध्य प्रदेश) नारे और यहां से उत्तर प्रदेश से होते हुए मगध में प्रवेश किए जहां उन्हें स्थायित्व मिला।

असुरों का अधिपत्य पश्चिमोत्तर क्षेत्र में प्रारंभिक काल में था। आर्यों ने भी पहले वही आकर अड्डा जमाए और असुरों को परास्त करने के बाद आर्यों का राज्य शतद्रु के पास स्थापित हुआ।

असुर आर्यों के पूज्य थे। सम्मिलित रूप से देव और असुर दोनों की पूजा होती थी कालांतर में देव और असुर की श्रेष्ठता को लेकर मतभेद हुआ। देवासुर संग्राम भी हुआ आर्यों का एक परिवार ईरानी असुर पूजक और दूसरा वर्ग देवीपूजक हो गया आज भी रानियों ने मुख्य देवता अहुर मज़्द अर्थात असुर को ही पूछते हैं। ईरानी स का उच्चारण ह के रूप में करते हैं अर्थात असुर को वह अहुर कहते हैं जैसे सिंधु को हिंदू कहते हैं। आर्यों से परास्त होने के बाद असुर पलायन कर गए और दुर्गम पर्वत अरण्य में अपना आवाज बनाया।

असुर जनजाति की संस्कृति

असुर जनजाति झारखंड की सबसे प्राचीन और 'आदिम' जनजातियों में से एक है। यह विशेष रूप से विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह (PVTG) की श्रेणी में आती है। इनकी संस्कृति प्रकृति, लौह कला और प्राचीन मान्यताओं का एक अनूठा संगम है।

असुर जनजाति की संस्कृति के प्रमुख पहलू नीचे दिए गए हैं:

1. अद्वितीय लौह कला —असुर जनजाति को दुनिया का पहला 'लौहविज्ञानी' माना जाता है। वे सदियों से पत्थरों (अयस्क) से लोहा गलाने की तकनीक जानते हैं। लोहा गलाने की भट्टी को वे एक 'गर्भवती माता' के समान मानते हैं। जब लोहा गलाया जाता है, तो महिलाएं विशेष गीत गाती हैं ताकि भट्टी से "स्वस्थ बच्चा" (शुद्ध लोहा) निकले। इनके पूर्वज 'सुकरा' और 'सुकराइन' को लोहा गलाने की कला का जनक माना जाता है।

2. विशिष्ट धार्मिक मान्यताएं —असुरों का धर्म प्रकृतिवाद और पूर्वजों की पूजा पर आधारित है । इनके मुख्य देवता 'सिंगबोंगा' (सूर्य) हैं। इसके अलावा वे धरती माता और मरांग बोंगा की पूजा करते हैं। असुर समुदाय स्वयं को प्राचीन राजा 'महिषासुर' का वंशज मानता है। जहाँ पूरे भारत में दुर्गा पूजा का उत्सव मनाया जाता है, असुर जनजाति इसे शोक के रूप में मनाती है। वे इस दौरान 'महिषासुर दसईं' मनाते हैं और अपने पूर्वज की याद में दुखी होते हैं।

3. सामाजिक संरचना और विवाह — असुर तीन उप-समूहों में विभाजित हैं: बीर असुर, बिरजिया असुर और अगरिया असुर। इनमें गोत्र (किली) का बहुत महत्व है। 'इदि-ताई-इते' (पारस्परिक सहमति) और 'ओदह बिहा' (तयशुदा विवाह) इनके प्रमुख विवाह स्वरूप हैं। इनमें 'दहेज' (वधु मूल्य) देने की प्रथा है, जो आमतौर पर बहुत मामूली राशि (5-7 रुपये) होती है। पहले इनके यहाँ शिक्षा और संस्कृति हस्तांतरण के लिए 'गिति ओड़ा' नामक युवागृह होते थे, जो अब लुप्तप्राय हैं।

4. भाषा और साहित्य — यह 'मुंडा' भाषा परिवार का हिस्सा है। यूनेस्को ने असुरी भाषा को 'विलुप्तप्राय' श्रेणी में रखा है। अब केवल कुछ हजार लोग ही इसे शुद्ध रूप में बोल पाते हैं। इनका साहित्य लिखित न होकर मौखिक (गीत, लोककथाएं) है। हाल के वर्षों में 'असुर अखड़ा' जैसे रेडियो कार्यक्रमों के जरिए इसे बचाने की कोशिश की जा रही है।

5. प्रमुख पर्व और त्योहार — इनके त्योहार कृषि और प्रकृति चक्र से जुड़े होते हैं। फूलों का त्योहार सरहुल इनके प्रमुख त्योहारों में से एक है , सोहराय त्यौहार में पशुओं की पूजा की जाती है । सरही कुटासी इनका विशेष त्योहार है जो लोहा गलाने के उद्योग की समृद्धि के लिए मनाया जाता है। नवाखानी को नई फसल के स्वागत का पर्व के रूप में मनाया जाता है ।

असुर जनजाति की संस्कृति और उनकी प्राचीन परंपराओं के विलुप्त होने के पीछे कई गहरे सामाजिक, आर्थिक और आधुनिक कारण हैं। यह एक गंभीर चिंता का विषय है क्योंकि एक पूरी सभ्यता की 'मौखिक विरासत' और 'तकनीकी ज्ञान' खत्म होने की कगार पर है।

विलुप्तता के कगार पर असुर जनजाति की संस्कृति

असुर जनजाति की जनसंख्या दिन प्रतिदिन घटते जा रही है। वर्तमान समय में स्थिति ऐसी है कि असुर जनजाति विलुप्तता के कगार पर खड़ी हो गई है । वास्तविक तथ्य यह है कि और असुर जनजाति की संस्कृति अपनी पहचान खो रही है और अगर किसी समाज या समुदाय की संस्कृति परिवर्तित होती है तो वह समाज भी अपने वास्तविक मूल रूप को खो देता है।

असुर संस्कृति के विलुप्त होने के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं ।

1. आधुनिक तकनीक और लौह उद्योग का प्रभाव —असुरों की पहचान उनकी पारंपरिक लोहा गलाने की तकनीक से ही थी। टाटा स्टील जैसे बड़े उद्योगों और आधुनिक मशीनों के आने से असुरों द्वारा बनाए गए पारंपरिक लोहे की मांग खत्म हो गई। संसाधनों की कमी वनों के कटाव और कड़े वन कानूनों के कारण उन्हें लोहा गलाने के लिए आवश्यक लकड़ी (कोयला बनाने के लिए) और लौह अयस्क मिलने में कठिनाई होने लगी और परिणाम स्वरूप लोह गलाने का कार्य भी छीन गया ।

2. भाषा का लोप — असुर जनजाति की अपनी भाषा 'असुरी' है, जो अब लुप्तप्राय श्रेणी में है। स्कूलों और कॉलेजों में शिक्षा का माध्यम हिंदी या अंग्रेजी है, जिससे नई पीढ़ी अपनी मातृभाषा से दूर हो गई है। जब किसी संस्कृति की भाषा मरती है, तो उसकी लोककथाएं, गीत और परंपराएं भी धीरे-धीरे समाप्त हो जाती हैं और परिणाम स्वरूप उनका संस्कृति नष्ट हो जाता है ।

3. वनों से विस्थापन — असुर मुख्य रूप से पहाड़ों और घने जंगलों (विशेषकर नेतरहाट के पठारी क्षेत्रों) में रहते थे। बॉक्साइट खनन के कारण इनके निवास स्थलों को काफी नुकसान पहुँचा है। वनों पर आधारित उनकी जीवनशैली (जड़ी-बूटी, शिकार, फल-कंद) आधुनिक विकास की भेंट चढ़ गई। इस पार्कर असुर जनजाति जड़ी बूटियां के ज्ञान को भी कोट जा रही है। अश्रु को जड़ी बूटियां का अच्छा ज्ञान था जो बड़ी से बड़ी बीमारियों का इलाज इन्हीं वर्तमान में जंगलों और वनों से दूर होने के कारण यह लोग अपने उसे अद्भुत ज्ञान को भी खो रहे हैं।

4. गरीबी और पलायन —आर्थिक तंगी के कारण असुर समुदाय के युवा अपने गांवों को छोड़कर शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। अपनी उन्नत लौह कला को भूल कर वे शहरों में निर्माण श्रमिक के रूप में काम करने को मजबूर हैं। इसी कारण इनकी वास्तविक स्थिति खराब होते जा रही है । परिवार से दूर हो कर कुछ पैसों के लिए ये लोग अपने स्वास्थ्य की भी चिंता नहीं करते । रोटी कपड़ा और मकान की आवश्यकता के लिए यह मजदूर के रूप में कार्य कर रहे हैं। बॉक्साइट के खदानों में मजदूर के रूप में कार्य करते हुए अपने जीवन को व्यतीत कर रहे हैं।

5. सांस्कृतिक आत्मसातीकरण — मुख्यधारा के समाज के संपर्क में आने से असुरों ने अपनी विशिष्ट पहचान खोनी शुरू कर दी है। धार्मिक परिवर्तन ईसाई मिशनरियों के प्रभाव या हिंदू धर्म के बढ़ते प्रभाव के कारण उनकी अपनी पारंपरिक पूजा पद्धतियां और 'बोंगा' परंपराएं कमजोर पड़ गई हैं। त्योहारों का स्वरूप: अब नई पीढ़ी पारंपरिक 'सरही कुटासी' की जगह आधुनिक त्योहारों को अधिक महत्व देने लगी है। सांस्कृतिक आत्मसातीकरण में सबसे अधिक प्रभाव ईसाई धर्म का पड़ा है । जिसके परिणाम स्वरूप धर्मांतरण की प्रक्रिया शुरू हो गई है। धर्मांतरण के कारण असुर अपनी मुख्य पहचान खोते जा रहे हैं।

धर्मांतरण — असुर जनजाति में धर्मांतरण के कारण असुरों की अपनी संस्कृति विलुप्त हो रही है। यह विषय बहुत ही संवेदनशील है इस विषय में बहुत लोग बातचीत नहीं करना चाहते। धर्मांतरण के विषय में जानकारी के लिए मैंने प्राथमिक स्रोत की सहायता ली है जिसका विवरण इस लेख में प्रस्तुत किया गया है।

धर्म के आधार पर असुर जनजाति का वर्गीकरण

क्रम संख्या	धर्म	संख्या	प्रतिशत
1	सरना	95	95
2	हिंदू	5	5
3	ईसाई	0	0
4	मुस्लिम	0	0
5	सिख	0	0
6	बौद्ध	0	0
कुल		100	100

(प्राथमिक स्त्रोत)

विश्लेषण — धर्म के आधार पर उत्तरदाताओं और उत्तरदात्रियों का वर्गीकरण करने पर यह प्राप्त हुआ कि सरना धर्म को मानने वालों की संख्या 100 में से 5 ईसाई है , सरना 95 है तो उस प्रकार सरना धर्म को मानने वाले की संख्या अधिक है।

यहां पर यह ध्यान देने की आवश्यकता है कि कुछ असुर धीरे-धीरे ईसाई धर्म में परिवर्तित हो रहे हैं। इस आंकड़े के विश्लेषण से या स्पष्ट है की असुर जनजाति में 5 %असुर ईसाई के रूप में पाए गए हैं और बाकी 96% सरना धर्म को मानते है । जबकि असुरों के इतिहास को खंगालने पर यह प्राप्त होता है की असुर पहले कभी ईसाई नहीं थे वे सभी सरना धर्म को मानते थे परंतु वर्तमान में धर्म परिवर्तन के कारण असुर ईसाई बनते जा रहे है।

बिशुनपुर के ग्राम जैसे जोभीपाट, सखुआपानी में असुरों की सघन आबादी है। यहाँ का कठिन भौगोलिक परिवेश जहाँ एक ओर इन्हें बाहरी दुनिया से अलग रखता था, वहीं अब सड़क और संचार के विकास ने यहाँ सांस्कृतिक आदान-प्रदान को तेज कर दिया है। गुमला जिले के बिशुनपुर प्रखंड में कुल 68 गाँव हैं। प्रशासनिक दृष्टि से इन गाँवों को 10 पंचायतों में विभाजित किया गया है।

जब मैं गुमला जिला का बिशुनपुर प्रखंड गई वहां जाकर जो भी पाठ नामक एक ग्राम में गई जहां पर कुछ असुरों से बातचीत की और उनका अवलोकन किया तो मुझे यह परिणाम प्राप्त हुआ कि उन लोगों में धर्मांतरण हो रहा है जो असुर सरना धर्म को मानते थे वह असुर गॉड अर्थात ईसा मसीह को करने लगे हैं धीरे-धीरे उन असुरों का इसी रूप में परिवार हो रहा है इस प्रकार उनकी अपनी संस्कृति खत्म हो रही है और ईसाई धर्म की संस्कृति उनकी संस्कृति का एक हिस्सा बनते जा रही है जो भी पाठ की सुनीता असुर का कहना था कि स्कूल के द्वारा उन्हें यीशु की तस्वीर प्राप्त होती है और मिशनरियों के द्वारा ही उन्हें शिक्षा दी जाती है इसलिए यह लोग यीशु को मान रहे हैं सुनीता असुर से बातचीत करने के दौरान मैंने यह जानने की कोशिश की की क्या वह अपने धर्म को भूल रहे हैं तो उन्होंने कहा कि वह

अभी भी प्रकृति पूजा करते हैं परंतु इसके साथ यीशु की तस्वीर उनके घर में प्राप्त हुई है इसका प्रमाण में नीचे चित्र में दे रही हूँ।

बिशुनपुर प्रखंड के प्रज्ञा केंद्र के पास की फोटो।

फोटो संख्या 1

सुनीता असुर की फोटो

फोटो संख्या 2

सुनीता असुर की घर के अंदर की फोटो।

फोटो संख्या 3

असुरों से बातचीत करते दौरान ली गई तस्वीर

फोटो संख्या 4

फोटो से स्पष्ट है कि बिशुनपुर के इलाके में अगर स्वयं अवलोकन करके प्राथमिक आंकड़े प्राप्त किए हैं। यह सभी फोटो बिशनपुर प्रखंड एवं उसके ग्रामीण इलाके के हैं। फोटो संख्या एक में बिशुनपुर प्रखंड के कार्यालय के पास ली गई है जहां पर प्रज्ञा केंद्र भी है। इस फोटो के माध्यम से यह साबित किया गया है कि मैं स्वयं बिशुनपुर जाकर अवलोकन की हूँ। फोटो संख्या दो में सुनीता असुर की तस्वीर है। इन्होंने यह बताया कि यह यीशु को मानते हैं और अपने सरना धर्म से भी जुड़े हुए हैं। फोटो संख्या तीन में सुनीता असुर के घर की अंदर की तस्वीर है जिसमें यीशु की तस्वीर स्पष्ट रूप से दिख रही है। इस तस्वीर से स्पष्ट है कि ये लोग ईसाई धर्म को स्वीकार कर रहे है। फोटो संख्या चार कुछ असुर महिलाएं और पुरुषों की तस्वीर है जिसे कुछ महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की गई जो इसलिए के लिए आवश्यकहै।

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से, असुर 'विजातीय संस्कृति' के प्रभाव में अपनी मौलिकता खो रहा है। रॉबर्ट रेडफील्ड के 'लोक-नगरीय सातत्य' के सिद्धांत के अनुसार, बिशुनपुर के असुर तेजी से नगरीय संस्कृति की ओर झुक रहे हैं, जिससे उनकी 'लोक संस्कृति' का लोप हो रहा है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

असुर जनजाति को सरकार ने विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह' की श्रेणी में रखा है । असुर जनजाति अत्यंत पिछड़ी हुई जनजाति है इनकी आर्थिक स्थिति दयनीय है । इनके पास रोजगार की कमी है। असुर जो मुख्य रूप से जंगलों पर आश्रित थे वर्तमान में सरकार के द्वारा जंगल पर आधिपत्य होने के कारण जंगल से ना तो प्रचुर मात्रा में जड़ी —बूटी और नाही जंगली उत्पाद ला पाते हैं। इसी कारण ये लोग अपने अद्‌भुत जड़ी बूटियां के ज्ञान और समझ को बोलते जा रहे हैं। उनकी जो मुख्य पहचान लोहा गलाने का कार्य था यह लोग लोहा के अस्त्र-शस्त्र का निर्माण करते थे वर्तमान में अब इन लोगों से यह कार्य भी छिन गया है परिणाम स्वरूप यह लोग पलायन करने को मजबूर हो गए हैं अपनी रोजी-रोटी चलाने के लिए बॉक्साइट के खदानों में श्रमिकों के रूप में कार्य करते हुए अपने मूल पहचान और संस्कृति को खोकर विलुप्तता के कगार पर पहुंचे रही है असुर जनजाति।इन असुरों के पास उन वस्तुओं का भी अभाव है वर्तमान समय में जहां दुनिया आधुनिकता की ओर इतनी तेजी से बढ़ रही है और शारीरिक सुख सुविधाओं का इस्तेमाल कर रही है वहीं पर दूसरी और असुर जनजाति अत्यंत दयनीय हालत में स्थित है। अंतत यह निष्कर्ष प्राप्त होता है की असुर जनजाति और उसकी संस्कृति के विलुप्त होने का मुख्य कारण आर्थिक स्थिति ही है। भोले भाले और सरल स्वभाव के असुर जनजाति की यही गरीबों का फायदा कुछ ईसाई मिशनरियों द्वारा उठाए जा रहा है और अच्छी शिक्षा और अच्छी जीवन शैली का लोग देखकर उनके धर्म को परिवर्तित किया जा रहा है।

वर्तमान समय में असुरों की संस्कृति की सुरक्षा के दृष्टि से कुछ कार्यक्रम चलाए जा रहे है जो हितकारी है । असुर मोबाइल रेडियो भी इसी का एक अहम हिस्सा है । झारखंड के कुछ क्षेत्रों में असुर भाषा में रेडियो प्रोग्राम चलाए जा रहे हैं। ये एक अच्छा पहल है । इसके अलावा उनकी भाषा को बचाने के लिए डिक्शनरी तैयार करने के प्रयास हो रहे हैं।ऐसा करने से उनका भाषा ‘ आसुरी ’ सुरक्षित रहेगा।

मेरा सुझाव यह है कि असुरों की सबसे पहले जो वास्तविक समस्याएं हैं रोजगार एवं गरीबी जिस कारण वह पलायन कर रहे और धर्म परिवर्तित भी हो रहा है उसे और सरकार को ध्यान देने की आवश्यकता है। उनकी आर्थिक सहायता के लिए कुछ योजनाएं चलाने की आवश्यकता है जो जमीनी स्तर पर कार्य करें। और सरकार को यह ध्यान देने की आवश्यकता है कि जब असुरों को शिक्षित किया जा रहा है तो स्कूलों के द्वारा धर्म का प्रचार ना किया जाए बल्कि केवल शिक्षा पर ही ध्यान दियाजाए।

संदर्भ सूची

1) ल्युबा, के. के. (1963). द असुर: ए स्टडी ऑफ प्रिमिटिव आयरन-स्मेल्टर्स. भारतीय आदिमजाति सेवक संघ, नई दिल्ली।

2) साहु चतुर्भुज, (2012), ‘‘ झारखण्ड की जनजातियाँ ’’ , के.के. पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या 107, 108

3) लालसोता सी.एवं उरांव प्रकाश चन्द्र , “ आदिम जनजातियाँ ” , बिहार सरकार कल्याण विभाग बिहार जनजातीय कल्याण शोध संस्थान मोराबादी रोड, रांची, पृष्ठ संख्या -7

4) शर्मा बिमला चरण, (2014) , “ झारखण्ड की जनजातियाँ ” , झारखण्ड झरोखा रांची , पृष्ठ संख्या 44-45

Bharat ki Janganana 2011, Primary Census Abstract (Scheduled Tribes), Jharkhand.

2011 ki janganana ke aakde uplabdha hain. 2011 ke anusar, Jharkhand mein Asur janjati ki jansankhya lagbhag 22,459 thi.

"Dr. Ram Dayal Munda Tribal Welfare Research Institute (TRI), Ranchi: Monograph/Survey Report on Asur Tribe."